राज्य परिशिष्ट 11

[यीशु मसीह के दृष्टान्त]
हल पर हाथ रखना

लूका 9:61-62 में "हल पर हाथ रखने का दृष्टान्त"

परमेश्वर के राज्य में

चेला होने के विषय में बताता हैं।

पढ़ें लूका 9:51-62

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें। यीशु के समय में हल में एक मजबूत लकड़ी का डण्डा होता था जिसे तिरछे एक डण्डे पर बान्धकर बैल द्वारा खींचा जाता था। इस डण्डे के नीचे की ओर एक नुकीला सिरा होता है और वह हल के रूप में कार्य करता है। डण्डे का ऊपरी छोर एक सीधी रेखा में हल चलाने के लिए, हैंडल के रूप में कार्य करता है। हालाँकि, अगर कोई व्यक्ति आगे की बजाय पीछे की ओर देखता रहे, तो वह सीधा हल को नहीं जोत सकता। अपनी गलतियों को सुधारने के लिए, उसके लिए यह उचित होगा कि वह अपने हल को रोके और जो भी उसने किया है, उसे चारों ओर घूमकर देखे। लेकिन सिर्फ़ एक दिशा में देखते हुए दूसरी दिशा में जुताई करने से काम नहीं बनेगा।

---

2. संदर्भ की जाँच करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहचानें।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग" हो सकते हैं। दृष्टान्त की *परिस्थिति* दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल या उपलक्ष्य* के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस *माहौल* में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1)**इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका 9:51-61 में पायी जाती है।**

पद 51 में, यीशु ने अपना मुख यरूशलेम की ओर किया। वह वहाँ जाने के लिए दृढ़ था और उन सभी लोगों के लिए अपना जीवन दे दिया, जो उस पर विश्वास करते थे। यीशु मसीह का यह दृढ़ संकल्प भविष्य के तीन चेलों के दृढ़ संकल्प के विपरीत है!

यह सभी पद हमें लूका 9:23-24 और लूका 9:22 के बीच के सम्बन्ध की याद दिलाते है। पहले पद में, यीशु कहते हैं, "मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुःख उठाए, और पुरनिए और महायाजक और

शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे।" और दूसरें पदों में उन सबसे उसने कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा।" यह ऐसा है जैसे यीशु कह रहे थे कि परमेश्वर ने उन्हें जो कार्य सौंपा था, उसे पूरा करने का उनका अपना दृढ़ संकल्प सभी मसीही चेलों के लिए उदाहरण होना चाहिए।

चेला होने के विषय में यीशु के दिये हुए उपदेश इस प्रकार से हैं :
एक सच्चे चेले की पहली चार विशेषताएँ लूका 14:26,27,33,34,35 में पाई जाती हैं। एक सच्चा चेला मसीह को अन्य सभी सम्बन्धों से ऊपर रखता है, वह मसीह के कष्टों में सहभागी बनता है, वह मसीह को अपनी सारी सम्पत्ति से ऊपर रखता है, और नमक के समान है : जो स्वाद को बढ़ाता है और भ्रष्ट आचरण का विरोध करता है।

एक सच्चे चेले की पाँचवीं विशेषता यह होती है कि वह पीछे की ओर वापस मुड़कर नहीं देखता। एक सच्चा चेला अन्त तक यीशु मसीह के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध रहता है। यह विशेषता उन तीन चेलों के दृढ़ संकल्प के विपरीत है जो चेला बनना चाहते हैं :

चेला बनने के लिए पहला इच्छुक व्यक्ति यीशु का अनुसरण करने के लिए बहुत उत्सुक था। उसने चेला बनने के लिये आवश्यक मूल्यों को चुकाना ज़रूरी नहीं समझा। उसने यीशु के पीछे की भीड़, आश्चर्यकर्म और लोगों के उत्साह को देखा, वह यीशु से करीबी से जुड़ना चाहता था जो इस सारे कार्यों का केन्द्र था। लेकिन जैसे ही सुसमाचार की कहानी को आगे हम देखते हैं, यहूदियों ने यीशु को अस्वीकार कर दिया (यूहन्ना 5:18), गलीली प्रान्त ने उसे बाहर निकाल दिया (यूहन्ना 6:66), गदरेनियों के लोगों ने उससे उस क्षेत्र में से बाहर निकल जाने की विनती की (मत्ती 8:34), सामरिया प्रान्त ने उसे आवास देने से इनकार कर दिया (लूका 9:53), पृथ्वी के लोगों ने उसे अस्वीकार कर दिया (मत्ती 27:23) और यहाँ तक कि अन्त में स्वर्ग ने भी उसे छोड़ दिया (मत्ती 27:46)। दृढ़ चेला बने रहना संघर्ष, अस्वीकृति और पीड़ा के मूल्य को दर्शाता है!

चेला बनने के लिए दूसरा इच्छुक व्यक्ति यीशु का अनुसरण करने के लिए तैयार नहीं था। एक ओर, वह प्रेरितों के समान यीशु का करीबी अनुयायी बनना चाहता था। दूसरी ओर, उसने यीशु का अनुसरण करने के लिए अपनी शर्त रखी। वह पहले जाकर अपने पिता को दफ़नाना चाहता था, जिसकी कुछ समय पहले ही मृत्यु हुई थी। यीशु इस विशेष व्यक्ति के मन में इस सच्चाई को बिठाना चाहते थे कि वह, यीशु मसीह, प्रभुओं का प्रभु है और उसका पूरी रीति से, बिना किसी योग्यता, शर्त या सन्देह के अनुसरण करना चाहिए। वह इस व्यक्ति को यह समझाना चाहते थे कि परमेश्वर के राज्य में, परमेश्वर का आत्मिक परिवार सांसारिक पारिवारिक सम्बन्धों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। याद रखें कि यीशु यह ख़ास बात इस इच्छुक चेले से कह रहे हैं न कि वहाँ पर मौजूद सुनने वाले लोगों से। यीशु यह नहीं कहते हैं कि मसीहियों को अपने माता–पिता या उनके अन्तिम संस्कार का ख़्याल नहीं रखना चाहिए। लेकिन यीशु कहते हैं कि एक मसीही को अपने माता–पिता से अधिक यीशु से प्रेम करना चाहिए। एक चेले को बिना किसी शर्त के यीशु का पालन करना चाहिए।

चेला बनने के लिए तीसरा इच्छुक व्यक्ति अज्ञानी था। वह शायद स्वयं या अपने परिवार को अच्छी तरह से नहीं जानता था। यीशु उसके मन के भीतर देखने में सक्षम था जो वह स्वयं नहीं देख सकता था (यूहन्ना 2:25)। यीशु उसके मन (विवेक) के विचार और उसके अनिश्चित (विवेक) प्रयोजनों को जानता था। वह इस व्यक्ति के हृदय और मन के विचारों को पढ़ने में सक्षम था। यीशु जानता था कि जब यह इच्छुक चेला अपने घर पहुँचेगा, तो वह अपने परिवार के उत्सुक और भावनात्मक दलीलों का आसान शिकार बन जाएगा ताकि वह घर में रहे और यीशु और उसके अन्य चेलों के साथ शामिल न हो।

इस समय पर, यीशु ने हल पर हाथ रखने के दृष्टान्त को बताया।

(2)**दृष्टान्त की कहानी लूका 9:62 में नीतिवचन के रूप में लिखी हुई है।**

(3)**इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग नीतिवचन में दिये गए है।**

इसका निहित अर्थ यह है, "एक बार जब आप हल पर अपना हाथ रख देते हैं, तो फिर कभी पीछे मुड़कर न देखें! अन्यथा, आप परमेश्वर के राज्य में सेवा के योग्य नहीं!"

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें। यीशु ने इस दृष्टान्त का कोई विवरण नहीं दिया है। इसलिए हमें कहानी या संदर्भ से प्रासंगिक विवरणों का अर्थ निकालना चाहिए।

वह व्यक्ति जो हल पर अपना हाथ रखता है। वह स्पष्ट रूप से वह व्यक्ति है जो यीशु मसीह का चेला बनना चाहता है या बनने का इच्छुक है। "हल पर हाथ रखने" का अर्थ है यीशु मसीह का चेला होने का निर्णय लेना और उसके लिए समर्पित रहना।

पीछे देखना। यह इस दृष्टान्त का केंद्रीय बिन्दु या मुख्य सन्देश है। यह तीन व्यक्ति, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने तरीके से चेला बनने की इच्छा रखे हुए था, ऐसा ही कार्य कर रहा था। पहले इच्छुक चेले ने मूल्य की गणना किए बिना यीशु मसीह का अनुसरण करने का निर्णय लिया, लेकिन बाद में उसे पीछे देखना पड़ा और उसके मूल्य की गणना करनी पड़ी।

दूसरा इच्छुक चेला केवल कुछ शर्तों के साथ यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहता था और वह पहले से ही अपने परिवार की ज़िम्मेदारियों को देख रहा था।

तीसरा इच्छुक चेला भी यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहता था, यह एहसास किये बिना कि उसके इस निर्णय पर उसके परिवार का क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा और वह भी ऐसे लोगों की ओर देख रहा था, जिन्हें वह यीशु मसीह का अनुसरण करने से अधिक महत्वपूर्ण मानता था।

परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं। यह यीशु की अपनी व्याख्या और इस दृष्टान्त या नीतिवचन का अनुप्रयोग है। जो लोग पूर्ण रूप से समर्पित नहीं हैं और एक चेले के रूप में यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए इच्छुक नहीं हैं, वे परमेश्वर के राज्य में सेवा के योग्य नहीं हैं।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य सन्देश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं। दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है,

अर्थात् एक केन्द्र बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 9:61–62 में हल पर हाथ रखने का दृष्टान्त परमेश्वर के राज्य में चेला" बनने के विषय में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश इस प्रकार है। प्रत्येक व्यक्ति का उत्तरदायित्व है कि वह दृढ़ और समर्पित बना रहे। उसे अन्त तक एक चेले के रूप में यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए पूरी ईमानदारी से समर्पित होना चाहिए।"

समर्पण, विशेष रूप से चेले होने के प्रति समर्पण, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग यीशु मसीह के लिए पूरी तरह से समर्पित रहते हैं। दृष्टान्त में व्यक्ति का हृदय दो जगहों पर बँटा हुआ था। एक ओर, वह यीशु मसीह का अनुसरण करना चाहता था, लेकिन दूसरी ओर, वह अपने परिवार को प्रसन्न भी करना चाहता था। हालाँकि, यीशु मसीह चाहते हैं कि चेला होने के लिये किसी भी व्यक्ति का मन बँटा हुआ न हो और वह पूर्ण रीति से उसके प्रति समर्पित रहे! एक इच्छुक चेले को यीशु का चेला बनने के मूल्य को समझना चाहिए। उसे स्वयं को यीशु मसीह को समर्पित करने का दृढ़ निर्णय लेना चाहिए और यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए पूरी ईमानदारी से स्वयं को समर्पित करना चाहिए। प्रत्येक दिन उसे स्वयं को पीछे मुड़कर छोड़ी हुई वस्तुओं (अर्थात्, उसका क्या मूल्य था) को देखने से रोकना चाहिए और केवल आगे की ओर ही देखते रहना चाहिए। यीशु मसीह चाहते हैं कि पूर्ण हृदय से चेले उनकी बातों के प्रति समर्पित रहें।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

खोजें व चर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक गधांश क्या सिखाते हैं, दृष्टान्तों से इनकी तुलना करें?

ध्यान दें।

यहोशू 24:15 – इस्राएल के लोगों को केवल यहोवा की सेवा करने के लिए बुलाया गया था, लेकिन लगातार परीक्षाएँ आने के द्वारा वे उन देवताओं की सेवा करने लगे, जिस स्थान पर वे रह रहे थे। उनके ऊपर आसपास के लोगों के समान बनने का लगातार दबाव था। यहोशू ने कहा, "यदि यहोवा की सेवा करनी तुम्हें बुरी लगे, तो आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे, चाहे उन देवताओं की जिनकी सेवा तुम्हारे पुरखा महानद के उस पार करते थे (यहोशू 24:2), और चाहे एमोरियों के देवताओं की सेवा करो जिनके देश में तुम रहते हो; परन्तु मैं तो अपने घराने समेत यहोवा की सेवा नित करूँगा।" उसने इस्राएल के लोगों को चुनौती दी कि वे यहोवा (बाइबल में स्वयं को प्रगट करने वाले परमेश्वर) की सेवा करें, न कि अन्य देवी–देवताओं की। बाइबल के परमेश्वर के साथ–साथ अन्य देवी–देवताओं पर विश्वास करना असम्भव है!

1राजाओं 18:16–40 – इस्राएल के लोगों को केवल परमेश्वर की उपासना करने के लिए बुलाया गया था, लेकिन वे वास्तव में देवताओं की सेवा करना चाहते थे, विशेषकर बाल देवता (उस समय मध्य पूर्व में कनानियों

का सबसे महत्वपूर्ण देवता) की । उनके हृदय यहोवा और बाल देवता के बीच बँटे हुए थे। एलिय्याह भविष्यद्वक्ता ने कहा, "तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो" (1 राजा 18:21)। उसने इस्राएल के लोगों को चुनौती दी कि वे या तो यहोवा की उपासना करें या अपने आसपास के लोगों के देवताओं की। बाइबल के परमेश्वर के साथ-साथ अन्य देवी-देवताओं पर विश्वास करना असम्भव है!

फिलिप्पियों 3:12-14 – प्रेरित पौलुस ने एक प्रतिज्ञा की जिसने पृथ्वी पर उसके पूरे जीवन को निर्धारित किया! उसने *एक काम* किया और वह यह था कि उसने जो पुरानी बातें थी उन्हें भूला दिया और आगे की बातों की ओर बढ़ता गया। वह लगातार अपने जीवन के लक्ष्य की ओर देखता रहा! इसी प्रकार का एक मन भजन 27:4; मरकुस 10:21, लूका 10:42 और यूहन्ना 9:25 में पाया जाता है।
